तज़किरा शाह बिरादरी

(व ख़ानदाने मुशाहिद अ्ली शाह जबलपुरी)

अज़ क़लम - अहक़र मुशाहिद अ्ली शाह जबलपुरी

अर्ज़े नाशिर - मैं हक़ीर फ़क़ीर मुशाहिद अ्ली एक ऐसे ख़ानदान से ताअ्ल्लुक़ रख़ता हूं जिसमें एक से बढ़कर एक बुज़ुर्गाने दीन का ज़हूर हुआ। बिल और बिला वास्ता हमारे ख़ानदान के हज़रात किसी न किसी बुज़ुर्ग से हमेशा ही जुड़े रहे हैं। लेकिन रंजो गम इस बात का है कि उनका ज़िक्र किसी किताब में नहीं मिलता यहां तक कि ख़ानदान के अक्सर लोग भी अपने आबाओ अजदाद कि सवानेह उमरी से नवाकिफ़ हैं। मेरे अंदर हमेशा से इस बात की ललक व जुस्तजू रहती थी कि अपने ख़ानदान के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा माअ्लूमात इकट्ठा कर सकूं ताकि अपने बुज़ुर्गों कि सवानेह हयात पढ़कर इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल कर दुसरों तक पहुंचा सकूं। इसे क़लम बंद करने की एक वजह यह भी रही कि हमारी बिरादरी के दुसरे लोग भी मुतास्सिर होकर अपने ख़ानदान की तारिख़ लिख़ सकें ताकि आने वाली नस्लों को फ़ायदा हो। मौला तबारक व तआ्ला का बारहा अहसान है कि उसने मुझे लिख़ने कि सलाहियत से नवाज़ा। लिहाज़ा अपने इसी हुनर का इस्तेमाल करते हुए मैंने अहद किया कि अपने ख़ानदान के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा तहक़ीक़ात कर उसे लिख़ूंगा और फ़िर बिस्मिल्लाह करके लिख़ना शुरू कर दिया। मैंने अपनी तरफ़ से पूरी ईमानदारी बरती है कि सच सच लिख़ सकूं अलबत्ता अगर कहीं कोई ग़लती हुई हो तो मैं रब तआ्ला की बारगाह में मुआ्फ़ी का तलबगार हूं।

हमारा हसब व नसब - हम मुस्लिम फ़क़ीर शाह बिरादरी में आते हैं। हमारी बिरादरी में अ्ल्वी सादात व दीगर हज़रात आते हैं जिनकी अकसरीयत हज़रत सैय्यदना मदारुल आ्लमीन मकनपुर शरीफ़ के हाथो बैअ्त व दाख़िले इस्लाम हुई। मदारे पाक की सवानेह हयात कि कुतुब व दीग़र सादाते मकनपुर शरीफ़ के अक़्वाल में मिलता है कि जब मदारे पाक हलब से हिजरत करके हिंदुस्तान आए तो साथ में अपने ख़ानदान के सादाते किराम व दीगर अ्ल्वी सादात को तबलीग़े दीन के लिए लेकर आए जिन्होंने हिंदुस्तान के कोने कोने में जाकर तबलीग़े दीन की। इन्हीं अ्ल्वी सादात व दीगर ख़ुलफ़ा हज़रात को मदारे पाक ने शाह लक़ब अ्ता किया जिन्हें शाह बिरादरी के नाम से जाना जाने लगा। सूबाई व दीगर इलाकों में हमारी बिरादरी को अलग अलग नामों से याद किया जाता है जैसे शाह,साईं, दीवान, क़ाज़ी, सूफ़ी, छपरबंद वग़ैरह।

अ्ल्वी सादात - अ्ल्वी सादात उन्हें कहा जाता है जो हज़रत अ्ली कर्रमुल्लाहु तआ्ला वज-हहुल करीम की इमाम हसन व इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अ्लावा दीगर औलाद में से हों जैसे हज़रत अ्ब्बास अ्लमबरदार, हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया, हज़रत उमर बिन अ्ली वग़ैरह।

फ़क़ीर - हमारी बिरादरी को फ़क़ीर इसलिए कहा जाता क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ की सूरह फ़ातिर कि आयत नं 15 में अल्लाह तआ्ला इरशाद फ़रमाता है "या अईयुहन नासु अनतुमुल फ़ु-क़-रा-उ इलल लाहि वल्लाहु हुवल ग़नीयुल हमीद " जिसका तर्जुमा है कि ऐ लोगों तुम अल्लाह ही के मुहताज (फ़क़ीर) हो और अल्लाह ही ग़नीयो हमीद है। लिहाज़ा हर इंसान अ्ल्लाह ही का फ़कीर है और उसको यह बात हमेशा ज़हन में रख़ना चाहिए। यही वजह थी कि हमारे बुज़ुर्ग नफ़्सीयाती ख़्वाहिश को ख़त्म कर असहाबे सुफ़्फ़ा की सुन्नत पर अ्मल करते हुए कसरत से फ़ाक़ा-कशी करते और बड़े से बड़ा मरतबाए विलायत हासिल करते। और दूसरी बात यह कि हमारे ख़ानदान के बुज़ुर्ग मिस्ले ख़ानाबदोश तब्लीग़े दीन के लिए मुसलसल सफ़र में रहते जिस वजह से उन्हें फ़ाक़ा-कशी के आ्लम में मुब्तिला रहना पड़ता। इसी बिना पर फ़क़ीर नाम से बिरादरी का लक़ब मशहूर हो गया और यह कोई ऐब नहीं। फ़क़ीर व फ़क़ीरी का मज़ाक़ मजहूलुल हाल लोग उड़ाते हैं। सूफ़ीयाए इस्लाम चाहे वोह किसी भी सलासिल से वाबस्ता हों अपने आपको फ़क़ीर कहने और कहलवाने में हमेशा से फ़ख़्र करते आए हैं क्योंकि फ़क़ीरी इख़्तियार करने से दुनिया कि मुहब्बतो रगबत कम होती है। हज़रते इन्सान भूख़ कि शिद्दत में अपने माअ्बूदे हक़ीक़ी कि ज़ात को पहचानता है।

अलबत्ता हमारी बिरादरी का एक बहुत बड़ा तबक़ा अपनी कम अक़्ली कि वजह से साइल यानी भीख़ मांगने का शोबा व मरहूमीन के नज़्रो नियाज़ ख़ाने का शोबा इख़्तियार कर लिया। जिनकी वजह से हमारी बिरादरी को बहुत ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ा। ऐसे लोग क़ाबिले मज़म्मत है, शिद्दत से इनका रद करना चाहिए। यह बात वाज़ेह रहे कि पुराने ज़माने में जब उम्मते मुस्लिमा में किसी का इंतिक़ाल होता तो बा इज़्ज़तो एहतिराम मरहूमीन के घर वाले हमारे बुज़ुर्गों को इसाले सवाब व दरूदो फ़ातिहा करवाने के लिए घर बुलाते थे जैसे दौरे हाज़िर में मदरसे में पढ़ने

वाले तुलबा, हुफ़्फ़ाज़े किराम, व आइम्मा ए दीन जाते हैं। फ़िलवक़्त जो हमारी बिरादरी के नाक़िसुल अक़्ल हज़रात हैं उनको फ़क़त ग़ुरबा व मसाकीन की हैसियत से बुलाया जाता है इसलिए ऐसी जगह जाने से मुकम्मल तौर पर परहेज़ करना चाहिए और जो जाते हैं उनको अंदाज़े हसन से समझाना चाहिए कि वोह ऐसा कोई भी काम न करें जिससे उनकी और बिरादरी के बदनामी का सबब बने।

शाह - शाह के मायने बादशाह के होते हैं। इसलिए बिरादरी से हटकर चाहे सूफ़ीयाए किराम हों चाहे सलातीन हों या दीगर ग़ैर मुस्लिम राजा महाराजा हों अपने नाम के आगे या बाद में शाह का लक़ब लगाते थे ताकि उनके नाम में चार चांद लग सके। हसनी हुसैनी सादाते किराम भी अपने नाम के साथ शाह का लक़ब लगाते हैं और हमारे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में बड़े इज़्ज़तो एहतिराम के साथ बिरादरी के हज़रात को "शाह जी" कहकर मुख़ातिब करते हैं।

आख़िर में यह कहना सही है कि सैय्यदना मदारे पाक की निस्बत से हमारी बिरादरी शाह का लक़ब लगाती है और नसलन अ्ल्वीयुस-सादात होने की बिना पर अ्ली लक़ब लगाते हैं।

हमारे ख़ानदान का पसमंज़र -
हमारे ख़ानदान के बुज़ुर्ग जिनके नाम तक माअ्लूम चल सका वोह हैं हज़रत सैयद महमूद अ्ली शाह रहमतुल्लाहि तआ्ला अ्लैह - आपका मसकन हासवा शहर फ़तेहपुर उत्तर प्रदेश रहा। आप वहां के किसी दरगाह के साहिबे सज्जादानशीन थे। आपके साहबज़ादे सैयद ज़ाकिर अ्ली ज़मीनो जायदाद व दीगर वुजूहात की बिना पर हसवा फ़तेहपुर से हिजरत करके तक़रीबन 1906 ई. को शहर जबलपुर आ गए और यहीं पर आपने सुकूनत इख़्तियार कि। आपकी मज़ार शरीफ़ ग़ालिबन करियापाथर कब्रिस्तान जबलपुर में वाक़ए है।

आपके सात साहिबजा़दे थे 1)सैयद बशीर अली 2)सैयद क़मर अ्ली 3) सैयद रहमान अ्ली 4) सैयद रहमत अ्ली 5) सैयद मुराद अ्ली 6)सैयद महबूब अ्ली। एक नाम माअ्लूम नहीं।

बुज़ुर्गों से यह बात माअ्लूम चलती है कि सैयद महमूद अ्ली र.ह हज़रत सैयद सालार मसऊद गाज़ी रहमतुल्लाहि तआ्ला अ्लैह के ख़ानदान से ताल्लुक़ रख़ते थे लेकिन इस बात की पक्की सनद मौजूद नहीं है। तक़रीबन तमाम आल औलाद आज भी सिलसिलाए आ्लिया मदारिया में बैअ्त है । तमाम अफ़राद अपने आप को शाह बिरादरी होने पर फख़्र महसूस करते हैं।

कसरते हिजरत व हस्वा फ़तेहपुर से राब्ता कट जाने कि वजह से मुकम्मल शिजराए नसब हासिल न हो सका। अलबत्ता आगे आने वाली नस्ल के इस्तेफ़ादा के लिए हज़रत महमूद अ्ली तक शिजरे को लिख़ दिया जा रहा है।शजराए नसब में मुराद अ्ली व महबूब अ्ली की आल का ज़िक्र किया गया है क्योंकि दीगर आल औलाद का पता न चल सका।

दौरे हाज़िर में मुराद अ्ली साहब की नस्ल अपने नाम के साथ सैयद का लक़ब लगाती है और महबूब अ्ली साहब की नस्ल अपने नाम के साथ "अ्ली शाह" का लक़ब लगाती है। सैय्यद न लगाने की सबसे अहम वजह में से एक यह है कि हमारा ख़ानदान मुकम्मल शिजराए नसब से महरूम है। बहरहाल हम अ्ल्वी सादात हों या न हो हमारे लिए सबसे बड़ी दौलत यही है कि अल्लाह ने हमारी तक़दीर में दीने इस्लाम लिख़ा और हम मुसलमान हैं।

हज़रत महबूब अ्ली शाह साहब की जबलपुर के करीब पाटन में सुकूनत थी। आपके दो साहिबज़ादे थे जिनकी कमसनी में ही आपका विसाले पुरमलाल हो गया और आपको ग़ालिबन घुर्रो शाह तकिया कब्रिस्तान में तदफ़ीन किया गया। आपके विसाल के बाद आपकी जौज़ा मोहतरमा ने पाटन से कूच कर जबलपुर शहर में सुकूनत इख़्तियार कि। जबलपुर तशरीफ़ आवरी के बाद हज़रत मिस्कीन शाह मलंग र.ह (कोतवाली) के ख़ानदान से ताल्लुक़ रख़ने वाले हज़रत सूफ़ी मुंशी शहीद फ़कीर मुहम्मद शाह साहब ने आपको अपने यहां अपना महमान बनाया व रहने के लिए जगह अ्ता फ़रमाई और उसके बाद अपनी एक साहबज़ादी कनीज़ फ़ातिमा का निकाह भी महबूब अ्ली शाह के छोटे साहबज़ादे जनाब शहादत अ्ली शाह से बुलूग़ीयत होने पर करवा दिया।

जनाब मुराद अ्ली शाह साहब व जनाब रहमत अ्ली शाह बिन महबूब अ्ली शाह साहब ने नया मोहल्ला में कुछ कुछ दूरी पर सुकूनत इख़्तियार कि जहां आज आपकी आल औलाद शादो आबाद हैं।

जनाब शहादत अ्ली शाह ने हनुमानताल ट्रेक्टर बिड़ी फ़र्म के पास सुकूनत इख़्तियार कि जहां आज आपकी आल औलाद शादो आबाद हैं।

जनाब शहादत अ्ली शाह साहब कि सबसे बड़ी साहबज़ादी मोहतरमा सायरा बेगम (सब्बो) का निकाह जनाब मुराद अ्ली शाह साहब के साहबज़ादे रमज़ान अ्ली शाह से हुआ।

ख़ानदान के सूफ़ी बुज़ुर्ग - हज़रत सूफ़ी महमूद अ्ली शाह वली सिफ़त बुज़ुर्ग थे जिनकी मज़ार का इल्म नहीं अलबत्ता हास्वा फ़तेहपुर में आपका मज़ार होने के इमकान हैं।

हज़रत महबूब अ्ली शाह वली सिफ़त बुज़ुर्ग थे जो कि पाटन में सरकारी ओहदे पर फ़ाइज़ थे। उनका वाक़िआ वालिद बुज़ुर्गवार बताते हैं कि आप घोड़े पर सवारी करते थे जो परेशान हाल होता अपने घर के बाहर नारियल रख़ देता आप अपने घोड़े पर सवार होते और परेशान हाल के घर के बाहर रख़ा हुआ नारियल घोड़े कि टाप से तोड़कर आगे बढ़ जाते अल्लाह के करम से परेशानीयां दूर हो जातीं।

आपके साहबज़ादे मोहतरम हज़रत सूफ़ी बाबा रहमत अ्ली शाह र.ह भी अपने वक़्त के पाए के बुज़ुर्ग और आमिल थे। उनके ताअ्वीज़, दुआ, आ्माल से कसीर ताअ्दाद में लोगों को फ़ायदा हुआ। आपको सिलसिला ए आलिया अबुल उलाईया व सिलसिला ए मदारिया कि ख़िलाफ़तो इजाज़त हासिल थी और आपकी मज़ार शरीफ़ रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में वाक़ए है।

आपके सभी साहिबज़ादे भी आपके नक़्शे क़दम पर चलते हुए

आ्ली जनाब मुराद अ्ली शाह भी बुज़ुर्गों से बहुत मुहब्बत व रग़बत रख़ते थे। शहंशाहे मलंगान हज़रत माअ्सूम अ्ली शाह मलंग मदारी मद्देज़िल्लहू आ्ली जब जबलपुर आते तो आपके ही घर लम्बे अरसे तक क़याम पज़ीरी कर आवाम को फ़ैज़याब करते। इसके अ्लावा हज़रत सरकार सैय्यदना सैय्यद वली शिकोह ज़ाफ़री मदारी रहमतुल्लाहि तआ्ला अ्लैह साहिबे सज्जादानशीन दरगाह मकनपुर शरीफ़ ने भी आपके यहां क़याम किया। इसके अ्लावा आपकी साहबज़ादी मोहतरमा भी महफ़िले मीलाद में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेतीं। इस बात से आपकी बुज़ुर्गों से मुहब्बत साबित होती है। आपकी मज़ार शरीफ़ रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में मदार चिल्ले के पीछे की तरफ़ अहाते में है।

शिजराए नसब -

1) महमूद अ्ली

आपके साहबज़ादे ज़ाकिर अ्ली

2) ज़ाकिर अ्ली

आपके 7 साहबज़ादे

1 बशीर अ्ली
2 क़मर अ्ली
3 रहमान अ्ली
4 रहमत अ्ली
5 महबूब अ्ली
6 मुराद अ्ली
7 एक का नाम माअ्लूम न चल सका।

महबूब अ़ली व मुराद अ़ली के आल औलाद का मुख़्तसर तज़किरा

महबूब अ़ली (आपके 2 साहबज़ादे रहमत अ़ली, शहादत अ़ली)

रहमत अ़ली (आपके 3 साहबज़ादे नूर अ़ली, अंसार अ़ली, रियाज़ अ़ली)

नूर अ़ली (आपके 2 साहबज़ादे वाजिद अ़ली, जावेद अ़ली)

वाजिद अ़ली (आपके 2 साहबज़ादे)

जावेद अ़ली (ग़ैर शादी शुदा)

अंसार अ़ली (आपके एक साहबज़ादे)

मोहसिन अ़ली (आपके एक साहबज़ादे ज़ैनुल अ़ली)

रियाज़ अ़ली (आपके एक (गोद) साहबज़ादे उमैद अ़ली)

शहादत अ़ली (आपके 4 साहबज़ादी व 3 साहबज़ादे)

सायरा बानो (सब्बो) , मुश्ताक़ अ़ली, साफ़िया बानो, शाहीन बानो, अशफ़ाक़ अ़ली, परवीन बानो, अहफ़ाज़ अ़ली

सायरा बानो - निकाह रमज़ान अ़ली

मुश्ताक़ अ़ली - आपके एक साहबज़ादे (जिनका नाम माअ़लूम न चल सका) व एक साहबज़ादी सलमा बेगम (निकाह सलीम अ़ली हटा जिला दमोह)

साफ़िया बानो (निकाह अ़ज़ीज़ अ़ली क़ादरी मुजावर मुहल्ला गढ़ा)

शाहीन बानो (निकाह अब्दुल अ़ली)

यह तमाम जानकारी ख़ानदान के जनाब सैय्यद उस्मान अली साहब, जनाब अशफ़ाक अ़ली साहब, जनाब वाजिद अ़ली साहब से हासिल की गई है और इसको क़लम बंद करने का शर्फ़ मुशाहिद अ़ली को हासिल हुआ।

शिजराए नसब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
दम मदार
बेड़ा पार
शिजरा ऐ नसब
हज़रत सैयद मेहमूद अली र. अ फ़तेहपुर शरीफ
सैयद ज़ाकिर अली (जबलपुर तकरीबन 1906)
सैयद मुराद अली (जबलपुर)
सैयद मेहबूब अली शाह (पाटन, जबलपुर)
सैयद उसमान अली
सैयद रमज़ान अली
रहमत अली शाह
शहादत अली शाह
सैयद शमशीर अली
सैयद इमरान अली
मुश्ताक़ अली
सैयद अमान अली
अशफाक अली
सैयद सोहराब अली
नूर अली अंसार अली रियाज़ अली
अहफाज अली
सैयद फैज़ अली
वाजिद अली
मोहसिन अली
उमेद अली
सैयद तनवीर अली
जावेद अली
सैयद कासिम अली
ज़ैनुल अली
मुशाहिद अली मुदस्सिर अली
इस्माइल अली